पाठ 7: स्वयं प्रकाश (नेताजी का चश्मा)

प्रश्न 1: सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग 'कैप्टन' क्यों कहते थे?

RBSE 2020 RBSE 2025 Most Important

चश्मेवाला एक बूढ़ा और लँगड़ा आदमी था, जो कभी सेना में नहीं गया था। फिर भी लोग उसे 'कैप्टन' कहते थे क्योंकि उसके हृदय में देशभक्ति और आज़ादी के दीवानों के प्रति **असीम सम्मान** था। वह नेताजी सुभाष चंद्र बोस की बिना चश्मे वाली मूर्ति को देखकर दुःखी होता था और अपनी छोटी सी दुकान से एक असली चश्मा उस मूर्ति पर लगा देता था। उसकी इसी देशभक्ति की भावना को देखकर लोग सम्मान से या व्यंग्य में उसे 'कैप्टन' कहते थे।

प्रश्न 2: 'वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में, पागल है पागल!' कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपने विचार लिखिए।

RBSE 2024

पानवाले की यह टिप्पणी अत्यंत **संवेदनहीन और अनुचित** है। कैप्टन शारीरिक रूप से लँगड़ा और ग़रीब अवश्य था, लेकिन उसके भीतर एक सच्चा देशभक्त छिपा था। नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाना उसकी देशभक्ति का बड़ा प्रमाण था। पानवाले को उसकी शारीरिक कमज़ोरी का मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए था। जो व्यक्ति देश के महापुरुषों का सम्मान करता है, वह पागल नहीं बल्कि सम्मान का हक़दार होता है। यह टिप्पणी पानवाले की छोटी मानसिकता को दर्शाती है।

प्रश्न 3: मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

RBSE 2023 RBSE 2026

कैप्टन की मृत्यु के बाद नेताजी की मूर्ति पर बच्चों द्वारा बनाया गया सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि **देश का भविष्य सुरक्षित हाथों में है**। देशभक्ति केवल बड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि देश की नई पीढ़ी (बच्चों) के मन में भी देश और शहीदों के प्रति सम्मान की भावना पूरी तरह जीवित है। वे भी अपने-अपने तरीके से देश-प्रेम व्यक्त कर सकते हैं।